# एक अलौकिक यात्रा, लेखराज से आदि देव प्रजापिता ब्रह्मा

**जिस प्रकार से चंदन को घिसने वाला अगर चंदन को छोड़ देता है तो भी उसके हाथ की खुशबू नहीं जाती, वैसे ही परमात्म शक्ति से ओत-प्रोत दादा लेखराज ने परमात्म सुगंध को चारों तरफ इस कदर फैलाया कि लोग उसकी भासना(प्यार) में खिंचे चले आये। परमात्मा शिव ने उन्हें युग निर्माणकर्ता की उपाधि दी और नाम रखा 'प्रजापिता ब्रह्मा'। ऐसा महापरिवर्तन जो एक साधारण मानव से एक दिव्य मानव की तरफ अग्रसर था, ने पूरी दुनिया को एक स्वर्णिम दुनिया में परिवर्तित करने का बीड़ा उठाया और आज पूरे विश्व की अनेकानेक आत्मायें उस परमात्म प्रेम की अनुभूतियों से पल्लवित एवं पुष्पित हैं।**

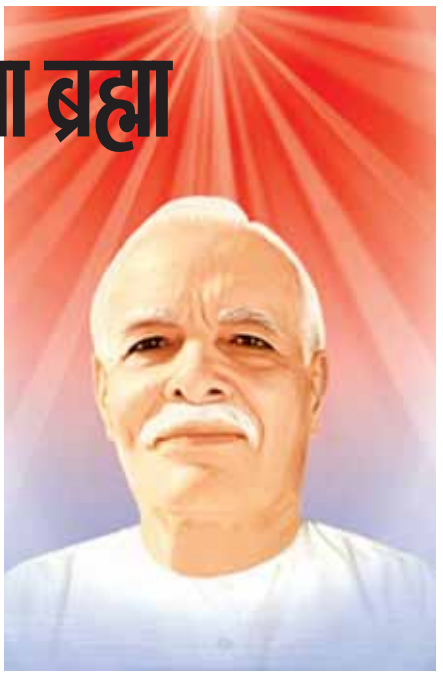

**हम प्रायः नहीं जानते कि हम क्या हैं? यह भी नहीं जानते कि हमारा 'होना' किस मतलब से है? आस-पास फैले चेतन और जड़ अस्तित्व के आपसी व्यवहार-व्यापार का रहस्य भी नहीं जानते हैं। पर कुछ लोग ऐसे हुए, जो इन सब रहस्यों से परिचित थे, इसलिए उनको अलौकिक पुरुष की उपाधि मिली। थे तो वो हमारी तरह ही, पर उनके बोल, व्यवहार और अनुभव हमसे भिन्न थे। इन उदाहरणों में अनेकानेक महापुरुष शामिल हैं। ऐसे अलौकिक पुरुषों में से एक तथा कई अर्थों में भिन्न हैं प्रजापिता ब्रह्मा बाबा। अलौकिक पुरुषों की जो भी कसौटियां हो सकती हैं, वे ब्रह्मा बाबा पर पूरी खरी उतरती हैं। उनका पूरा जीवन वृत्तांत दरअसल, परमात्म-सत्ता के निर्देशानुसार ही रहा। उनके साधारण व्यक्तित्व 'दादा लेखराज' से 'प्रजापिता ब्रह्मा' तक के महापरिवर्तन की जीवन गाथा यहाँ प्रस्तुत है...।**

1876 में सिंध में वैष्णव कृपलानी परिवार में जन्मे दादा लेखराज बचपन से वृद्धावस्था तक एक साधारण ईश्वर भक्त के रूप में ही कार्य व्यवहार करते रहे। उनका व्यक्तित्व मधुर और आकर्षक था। इस कारण से उनका जवाहरात का व्यवसाय खूब फलीभूत था। उनके बहुत अच्छे और गहरे सम्बंध राजा-महाराजाओं से थे। उनका गृहस्थ जीवन बहुत ही सुखी व सम्पन्न था। वे अपने गुरू के प्रति पूरी तरह से समर्पित थे।

## अलौकिक परिवर्तन

1936 के आस-पास, जब उनकी आयु साठ वर्ष की थी, उनमें अचानक एक अलौकिक परिवर्तन आया। और वो परिवर्तन इतना प्रभावशाली था कि उनका लौकिक कार्य व्यवहार से मन उचटने लगा। एकांत उनको भाने लगा। इसी प्रक्रिया में जब वो अपने मुम्बई के आवास में बैठे थे और उनके घर में सत्संग चल रहा था तो उनका मन एकाएक वहाँ से जाने को किया और वे उठकर अपने कमरे में चले गए। चूंकि दादा लेखराज इतने शिष्ट और सम्मानित व्यक्ति थे और गुरू के प्रति कितनी श्रद्धा थी, ये सब जानते थे। फिर उनके एक सम्बंधी के मन में संकल्प चला कि बाबा पहले तो कभी ऐसे बीच सत्संग से उठकर नहीं जाते थे, तो उन्होंने उनके पीछे-पीछे जाकर देखा तो उस कमरे में बाबा एकांत में बैठ गये और कमरा लाल प्रकाश से आलोकित था। और उसी समय दादा लेखराज को विष्णु चतुर्भुज का साक्षात्कार हुआ। दादा लेखराज जब उस साक्षात्कार से बाहर आये तो उनके अंदर कुछ प्रश्न थे और उन प्रश्नों का समाधान लेकर वे अपने गुरू के पास पहुंचे और घटनाक्रम का वर्णन किया।

## साक्षात्कार से साक्षात को समझा

लेकिन उनके गुरू ने यह कहकर मना किया आज तक हमें तो ऐसा साक्षात्कार नहीं हुआ है, और इसके बारे में मुझे कुछ नहीं पता। इसके बाद कहा जाता है कि दादा लेखराज को ऐसे बहुत सारे साक्षात्कार होने शुरू हो गये जिसमें निराकार परमात्मा का, विश्व में हो रही घटनाओं का, महाविनाश का, स्वर्ग का आदि-आदि। लेकिन इसमें एक खासियत यह थी कि ये जो साक्षात्कार होता था वो अन्य बातों से बिल्कुल भिन्न था। उनको परमात्मा ने जो साक्षात्कार कराये वो दादा लेखराज को नया लगा, लेकिन उनके मन को भाया। ये उनका अनुभव भी था और ये सत्य भी। और ये सिलसिला दो-तीन वर्षों तक लगातार चलता रहा। ऐसे में जब उन्होंने स्वयं के बारे में समझा, साथ ही परमात्मा के विश्व परिवर्तन के कार्य और ये उनका ही निर्देशन है, ये भी यथार्थ रूप से समझा। तब इस कार्य के लिए परमात्मा ने उन्हें ईश्वराधिकृत कर नाम दिया 'प्रजापिता ब्रह्मा'। और कहा कि आपको इस सृष्टि को दैवी सृष्टि बनाने हेतु निमित्त बनना है।

## दादा लेखराज को देखने भर से ही होते थे साक्षात्कार

अब ये कौन बताये कि दादा लेखराज के अंदर इतना बड़ा परिवर्तन आया और सच में वे बदल चुके हैं? तो इसका प्रमाण था उनके आस-पास के लोग, उनके सगे सम्बंधी। जिस दादा लेखराज को उन्होंने पहले देखा था, उनका चाल-चलन, व्यवहार पूरी तरह से बदल चुका था और उन्हें देखकर सभी को दिव्य साक्षात्कार होने लगे। इसके लिए सगे सम्बंधी ये भी बताने लगे कि जिस विश्वास के साथ दादा लेखराज बोलते हैं उससे उनको तनिक भी संदेह नहीं होता था कि यह ज्ञान सत्य नहीं है।

## ब्रह्मा की भूमिका के लिए स्वयं को किया समर्पित

1936-37 में अपने इस अनुभव एवं बोध के बाद उन्होंने स्वयं को शिव परमात्मा प्रदत्त अपनी ब्रह्मा की भूमिका के लिए सौंप दिया। उनका यह ज्ञान-यज्ञ 'ओम मंडली' से प्रारंभ होकर 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय' में रूपांतरित हुआ और सतत् विस्तार पाता रहा। 18 जनवरी 1969 को उनके अव्यक्त होने के बाद भी आत्माओं को पवित्र एवं दिव्य गुणों से सम्पन्न बनाकर नव-विश्व का सृजन करने के लिए प्रारंभ हुआ यह यज्ञ अब भी जारी है और वे ही अब भी ज्ञान-यज्ञ के सूत्रधार हैं।

## उनसे होती ईश्वरीय प्यार की खींच

वह देह, जिसमें परमात्म-सत्ता आई हो या उसे संस्कारित करके गई हो, चुम्बक की तरह अपने पास आने वाले लौह-कणों में स्फुरण पैदा किये बिना नहीं रहती। यह उसका एक तरह से नैसर्गिक गुण हो जाता है। हमने, आपने इतने अनुभव प्रसंग पढ़े-सुने या देखे हैं, उनमें ऐसा सदा ही हुआ कि

परमात्मा की लय में नाचा व्यक्ति अपने पास आये व्यक्ति में नाच पैदा नहीं करता, वह तो स्वतः हो जाता है। ऐसे बुद्ध पुरुषों के प्रभाक्षेत्र में प्रवेश करते ही आपको बदलाव महसूस होने लगता है। दादा लेखराज के पास जाते ही स्त्री, पुरुष तथा बालक उनकी दृष्टि पाते ही भावाविष्ट हो जाया करते थे। ऐसे अनेकों लोग अभी हैं जो यह बताते हैं कि उन्हें दादा के पास जाने पर भिन्न-भिन्न रूपों अथवा लोकों के साक्षात्कार हुए। उनसे मिलकर आया हुआ शायद ही कोई ऐसा हो, जो यह न कहे कि यह व्यक्ति तो अनूठा है। महसूस करने की इसी स्थिति को संभवतः रूहानियत या भागवत अनुभव कहा जाता है।

## ईश्वराधिकृत निमित्त 'प्रजापिता ब्रह्मा'

दादा लेखराज न तो शास्त्रों के ज्ञाता थे, न तो भाषा के विद्वान। उन्होंने तो उस परमात्म-सत्ता को जाना भर था और परमसत्ता ने ही उन्हें युगनिर्माण के कार्य के लिए चुना। इस तरह से वे ईश्वराधिकृत निमित्त थे। इसलिए लोग उनसे जानने के लिए उनके पास जमा हो गये। उन्होंने भी अपनी साधारण बोलचाल की भाषा में ही उस ईश्वरीय ज्ञान को साधिकार बताया, जिसे बताने में सामान्यतः भाषा भी डगमगाने लगती है। इस रूप में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि उनको परमात्म सत्ता ने अपने कार्य के लिए निमित्त बनाया था। इसी भूमिका के बारे में तो गीता का वचन है - 'यदा-यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।' रामचरित मानस में इसे इस तरह बताया गया - 'जब-जब होई धर्म की हानि, बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी, तब-तब प्रभु धर विविध शरीरा, हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।' इसी भूमिका के लिए निमित्त बने दादा लेखराज ने अपनी वाणी से अपने ज्ञान की गंगा में जिनको भी सराबोर किया वे फिर लौटकर नहीं गये। 1937 से प्रारंभ हुआ यह ज्ञान-यज्ञ कभी कमज़ोर नहीं पड़ा वरन् लगातार ज्ञान-पिपासुओं को आकर्षित करता रहा है। यह भी एक बड़ी कसौटी है। जिस पर दादा लेखराज कई महापुरुषों में आगे खड़े दिखाई पड़ते हैं। दादा लेखराज ने जब सर्वप्रथम ज्ञानामृत पान किया था, तब अपने एक पत्र में अपने घरवालों को लिखा था - 'पा लिया वह सब, जो पाना था। अब कुछ बाकी नहीं रहा।' उनके इस ज्ञान से नहाये लोग भी अब यही कहते हैं - 'पा लिया जो पाना था, अब कुछ शेष नहीं।' यही सच्चे अनुभव की कसौटी है।

## नैतिकता, मानवता, विश्वबन्धुत्व की प्रतिमूर्ति

भारत तो संतों की नगरी है ही, यहाँ पर बहुत सारे संतों ने परिवर्तन भी लाया। लेकिन एक प्रवृत्ति वाले ऐसे आध्यात्मिक मूल्य के प्रणेता दादा लेखराज, जिन्हें प्रजापिता ब्रह्मा के रूप में जाना गया, ने बहनों और माताओं या यूँ कहें की नारी शक्ति को, शक्तिशाली बनाकर समाज में उच्च स्थान दिलाकर, समाज से बुराइयों व विकारों से मुक्त करने का बीड़ा उठाया। यह कारनामा उन्होंने उस समय शुरु किया, जब उनकी उम्र 60 वर्ष की थी। उस समय उनके अन्दर एक परिवर्तन आया, परमात्मा के निर्देशन से, स्वपरिवर्तन से विश्व परिवर्तन की ओर बढ़े। जिसमें उन्होंने मूल्यों, मानवीय धारणाओं, विश्व बंधुत्व की भावना वाला एक नया विश्व लाने की ठानी, इस लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ने वाले प्रजापिता ब्रह्मा, जो कि दूरंदेशी तथा एक बड़े सामाजिक सुधारक थे, उनमें मानवता के प्रति दया-करुणा भाव था, इसलिए उन्होंने इसके लिए 1937 में नारी शक्ति को उद्धारक के रूप में सामने लाया और प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना की। जिसका आधार बनाया राजयोग को। मनुष्यों को पक्षपात व पूर्व मान्यताओं व धारणाओं से बाहर निकालने के लिए राजयोग मेडिटेशन बहुत ही मददगार साबित हुआ। आज इसी प्रयास का नतीजा है कि लाखों परिवार समाज में मूल्यनिष्ठ धारणाओं के साथ जीवन जी रहे हैं। इसी कार्य को देखते हुए कुछ अविस्मरणीय क्षण भी आए।

## वो अविस्मरणीय क्षण

जिसमें भारत सरकार ने 7 मार्च 1994 के दिन भारतीय डाक टिकट, 'प्रजापिता ब्रह्मा' के नाम पर जारी किया। इस डाक टिकट की 1 मिलियन से भी अधिक प्रतियाँ छपी। यह उनका सम्मान था, जिन्होंने निःस्वार्थ भाव से मानवता तथा नारी उत्थान के लिए अपना जीवन समर्पण किया। उन्होंने सभी को समाज में जीने की नव प्रेरणा प्रदान की, उन्हें मानसिक रूप से शक्तिशाली बनाया तथा नैतिकता व विश्व बन्धुत्व द्वारा नई दुनिया लाने का लक्ष्य बनाया।